9

तरंग

नारायण तीरथर द्वारा रचित श्री कृष्ण लीला तरंगिनी कथा और संवाद, क्रिया, नृत्य और संगीत युक्त नाट्य काव्य का मिश्रण है। इसमें श्री कृष्ण के जन्म से लेकर रुक्मिनी के साथ विवाह तक श्रीमद भागवतं के दशम स्कन्द में वर्णित भगवान कृष्ण की लीला बताई गई है। इस कार्य में दारु, गद्य, पद, श्लोक और गीतं (कीर्तन) युक्त 12 तरंगं हैं। तरंग का अर्थ है लहर और श्री कृष्ण लीला तरंगिनी का सरल अर्थ है ''श्री कृष्ण की क्रीड़ाओं की नदी''। इस कार्य में 156 गीतं हैं। तरंगं भाव, राग और ताल जैसे सभी महत्त्वपूर्ण तत्त्वों से युक्त होते हैं। नारायण तीरथर ने अपने समय में प्रचलित रागों का प्रयोग किया है और देशाक्षी, गौरी और मंगल कापी जैसे कुछ अपूर्व रागों का भी प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयोग की गई तालें धरुव, रूपकं, झंपा, मथ्य, अता इत्यादि हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, विद्यार्थी

- तरंगं की संरचना का वर्णन कर पायेगा
- अन्य संकीर्तनों के मध्य अंतर की तुलना कर पायेगा
- उक्त रचना से संबन्धित विशेषताओं का अवलोकन कर पायेगा

रागलक्षणं

रागं: बिलहरी

29वें मेल धीर शंकराभरणं जन्य

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प ध$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$प म$_1$ ग$_2$ रि$_2$ स

औडव संपूर्ण रागं

टिप्पणी

संचारं

ग प ध, प, – – प प म ग रि रि ग, रि, – – ग ग ग, , , रि ग प म ग रि

स नि ध, – स रि ग ग रि ग प, य – ग प ध, सं, , , – ध, सं रिं गं, , ,

स रिं गं रिं सं नि ध, – – ध गं रिं गं सं , पं मं ग रिं सं नि ध, – –

ध रिं, सं नि ध, – – ध सं, नि ध, प , ध प म ग रि ग , रि – –

रि प , म ग रि, ग रि स नि ध , – स , , – –

रागः बिलहरी **तालः आदि**

पल्लवी

पूरय मम कामं गोपाल

अनुपल्लवी

वारम वारम वंद नमस्तुते
वारिज दल नयन, गोपाल

चरणं-I

मन्येत्वं इह माधव दैवं
माया स्वीकृत मानुष भवं
धन्यैरद्रुत तत्व स्वभावं
दातरं जगतां अति वैभवं

चरणं-II

बृंदावन चर भर्हवतंश
भक्त कुन्ज वन बहुल विलास
संद्रानंद समुद – गीर्न हस
संगता केयुर समुदिता दास

चरणं-III

मत्स्य कूर्मादि दश महित अवतार
मदानुग्रह कर मदन गोपाल
वात्सल्य पालित वर योगी बृन्द
वर नारायण तीरथ वर्धित मोद

टिप्पणी

रागः बिलहरी

तालः आदि

रचयिता नारायण तीरथर

आरोहनं- स रि2 ग2 प ध2 सं

अवरोहनं- सं नि2 ध2 प म1 ग2 रि2 स

पल्लवी

(1) य , ग , , प ध , स , स , स नि ध , स । , ; ; प , । ध , प , प प म ग ॥

पूरय मम का - - मं गो पा - ल । - -

॥ रि , ग प , म ग , रि , स, स नि ध , । स , य य प , । ध , प , प प म ग ॥

- पू - र य म म का - - मं गो पा - ल - -

(2) ॥ रि, ग य पध, स, स, स नि नि ध । ग रि, य य ध रि । स नि ध प ध प म ग ॥

पू र य ममका - - म गो - पा - - ल - -

॥ रि, ग ध, प म ग, , रि, ग रिस स नि ध स ; ; ; प, । ध ध ध प ध प म ग ॥

- पू - र - य म म - - का - - मं गो पा - - ल - -

(3) ॥ रि , पूरय मम स नि नि । ध , स , ; ; । ; ; ; ; ॥ का - - -

अनुपल्लवी

(1) ॥ ; प ध प म ग रि ग , प , ; ध , ; । ; , सं , सं सं , सं , , नि ध प ध , ॥

वा - रं - - वा रम वंदन म - स्तुते

(2) ॥ ; म ग , प ध , सं , ; सं , सं , /

वा - रं - - वा रम वंदन म - स्तुते

(1) ॥ ; , सं , सं सं , सं , सं , प , प , । ध , सं , ; प , । ध , प , पपमग ॥

वारिज दल नय न - गो पा -ल-

-, वारं वारं वंदनम स्तुते

(2) ॥ ; , ध रिं सं सं , स , स , प , प , । ध रिं रिं सं स , प , । पाला

वा -रिज दल नय न - - गो (पूरय)

टिप्पणी

चरणं

(1) ॥ ; प , , प , , प , ; प , प , ; प , ध सं ध प , ध प , ध प म ग रि, ॥
मन्ये त्वं इह मा - धव दै - वं
॥ ; ग प , म ग , ग रि ग रि स नि़ ध , स रि , ग ग , प , ; प , ; ॥
मा - या स्वी - - कृत मा - नुष भ वं

(2) ॥ म - -न्ये त्वं इह माधव दैवं ॥
॥ माया स्वीकृत मानुष भवं ॥
॥ ; म ग , प ध , सं , , , सं , सं , ; रिं , , रिं सं सं , , नि ध प ध ,
ध - न्यै र द्रुत त त्व स्व भा - वं - -
॥ ; सं , , सं , , सं , ; प , ध , ध रिं सं नि ध , प , ध प म ग रि स रि ग
दा त रं जग तां - -अति , वै - -भ - -
॥ प ध सं
वं - - (पूरय)

शेष चरणं इसी प्रकार है।

पाठगत प्रश्न

1. कुल कितने तरंग हैं।
2. कृष्ण लीला तरंगिनी के गीतों का क्या नाम है?
3. बिलहरी कौन से मेल की जन्य राग है?

निर्देशित कार्य कलाप

1. कृष्ण लीला तरंगिनी से संबन्धित अधिक से अधिक गीतं एकत्र करें।
2. कृष्ण लीला तरंगिनी और गीत गोविंदं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करें और एक टिप्पणी तैयार करें ।